गुरुभक्ति यज्ञ 1937 - 1997

भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 20 अंक : 12	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चंदा : 50.00
शुक्रवार, 26.12.97	दिसम्बर, 1997	प्रति अंक : 5.00

बृहद् गुणातीत समाज के 'सर्वप्रथम आत्मीय' की अमरगाथा

अहो हो ! इस युग के कैसे समय दौरान महाराज ने
हमें धरती पर भेजा है
कि जिसमें–
हममें से कितनों को हमारे जीवनकाल दरम्यान ही
महाराज की द्विशताब्दी,
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की द्विशताब्दी,
ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज की शताब्दी,
ब्रह्मस्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज का अमृतपर्व व उनकी शताब्दी,
ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी की हीरक जयंती व अमृतपर्व,
प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी की हीरक जयंती, अमृतपर्व
व
भक्ति उत्सव,
प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की सुवर्ण जयंती व आत्मीय महोत्सव,
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की हीरक जयंती
व
प.पू. साहेब की सुवर्ण जयंती के
ब्रह्मानंद का सुनहरा मौका लूटने का सौभाग्य प्राप्त हुआ
और
अब दरवाजे पर आहट दे रहा है–प.पू. कांतिकाका का
'बंधुमैत्री महोत्सव'! यानि–उनकी 75वीं जन्म जयंती.....
मन में सहज ही प्रश्न उठेगा कि–
पू. कांतिकाका की ऐसी क्या विशेषता कि–
उनकी 75वीं जन्म जयंती ऐसे दिव्य उत्सव के रूप में सारा गुणातीत समाज मना रहा है?
'मन' है–ऐसे कुछ ना कुछ तर्क तो करेगा ही–सोचेगा ही !

वर्षों पहले मेरे मन में प्रश्न उठा था.....
हम तो प्रगट के उपासक हैं।
हमारे लिए तो–
गुणातीतभाव को पाए हुए प्रगट स्वरूप की जयंती की ही विशेषता रहती है
और
उसमें सभी परोक्ष स्वरूप आ ही जाते हैं।
तो फिर–हमारे यहां 'शरद्‌पूर्णिमा' पर **क्यों मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की जयंती भव्य उत्सव के रूप में हमेशा मनाई जाती है?**
उनकी ऐसी क्या विशेषता है?
यही प्रश्न मैंने प.पू. योगी बापा को पूछा था और उन्होंने सचोट उत्तर देते हुए कहा–
ब्रह्मरूप होने के लिए हमारा जन्म हुआ है
और
ब्रह्मस्वरूप संत के संबंध के सिवा कोटिकल्प तक जीव ब्रह्मरूप नहीं हो सकता।
संत–सिद्ध महात्मा तो खूब होते हैं–अनेक प्रकार की कक्षा के होते हैं
और
उनकी ऐसी रिद्धि-सिद्धि या ऐश्वर्य-प्रताप की चमक-दमक, चमत्कार से प्रभावित होकर–हो सकता है हम उनसे जुड़ भी जायें। लेकिन, यदि वह **संत 'ब्रह्मस्वरूप' नहीं होगा तो हमारे जीव को ब्रह्मरूप नहीं कर सकेगा।**
सो,

जिस संत में जुड़ो उसका मूल देखना कि–'ब्रह्मस्वरूप संत की परम्परा से यानि कि–**मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की परंपरा से** आ रहा है यह संत?'
क्योंकि–**तभी वह संत ब्रह्मस्वरूप होगा**
और
वही हमारे जीव को ब्रह्मरूप कर सकेगा।
इस कारण हमारे यहां मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की ऐसी अद्वितीय–अनोखी विशेषता है।
ऐसा ही कुछ पू. कांतिकाका के संदर्भ में है।
वच. अत्यं. 21 में महाराज ने कहा है–
'.... ऐसे जो **दृढ़ सत्संगी वैष्णव** हैं वही **हमारे तो सगे संबंधी** हैं और **वही हमारी बिरादरी है** व जीतेजी भी ऐसे वैष्णवों के साथ ही रहना है एवं श्रीकृष्ण भगवान के धाम में भी ऐसे वैष्णवों के साथ ही रहेंगे, ऐसा हमारा निर्णय है और **तुम्हें भी ऐसा ही निर्णय रखना चाहिए'** !
दो सौ वर्ष पहले महाराज ने जो यह बात करी वह थी–
भगवान के आसरे, भगवान के बल से, भगवान के होकर जीवन जीते एक महामानव के सर्जन का–बौद्धिक मूल्यांकन छोड़कर, भगवान के संबंध से जीवन जीते एक आत्मीय समाज के सर्जन का उनका संकल्प !
'आत्मीय–आत्मीयता' शब्द ही आत्मा से जुड़ा है
सो, **आत्मीयता की व्यापकता की कोई मर्यादा नहीं है–**
सीमा नहीं है
एक देशस्थभाव नहीं है
और–
'प्रत्यक्ष संत–वही मेरी आत्मा'–ऐसी निष्ठा से जो जीता होगा वही ऐसा आत्मीय बन सकेगा।
वर्ना, **व्यवहारिक आत्मीयता** का जितना मर्जी हम दंभ-दिखावा करें वह आत्मीयता **मानसिक-बौद्धिक होगी**
जो कि–
ऐन मौके पर खंडित हो ही जाएगी।
और....
ऐसी दृढ़ निष्ठा से जीते एक आत्मीय समाज का सर्जन करने महाराज से लेकर सभी गुणातीत स्वरूपों ने खूब कसनी सही और सहन करके वे खूब परिश्रम करते रहे !
और.... ऐसा लगता है कि आखिरकार
ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज पू. बा के परिवार को
इसी हेतु साथ लाए
और
प. पू. काकाश्री का संबंध देकर,
'तुम दोनों भाई-भाई होकर रहना, ब्रह्मांड डोलाओगे' की
पू. कांतिकाका को आज्ञा देकर इस समाज की स्थापना का श्री गणेश किया !

पू. कांतिकाका ने भी प.पू. बा के वात्सल्य से ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज के इस वचन को सब कुछ गिने बिना–पू. ज्योति बहन व पू. तारा बहन से संबंधित समाज की टीकाचर्चाओं को भी नज़रअन्दाज़ करके ताड़देव में सपरिवार प.पू. काकाश्री और प. पू. पप्पाजी के साथ एक दिव्य कौटुंबिक एकता करी.....
और
प्रभु की परछाई बन कर जीते एक आत्मीय निष्काम कर्मयोगी का आदर्श स्थापित किया !
जबकि, **उस समय** तो
बिना किसी लौकिक संबंध से यूं सत्संग के दो परिवार एक होकर जी सकें
उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था।
और वह भी **एक-दो-तीन महीने या वर्ष नहीं,**
बल्कि **सारी जिन्दगी** !
सो आज जो **गुणातीत समाज**–एक आत्मीय समाज हमारे सामने है–
जिसकी हम बातें करते हैं–
जिस पर हम गौरव करते हैं–
उसके वे सर्वप्रथम आत्मीय स्वजन हैं–
नींव की ईंट समान हैं।
इसी लिए तो **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी**
तीर्थस्थान **ताड़देव को 'आत्मीयता की गंगोत्री' कहते हैं।**
भले ही आज हम आत्मीयता की इतनी-इतनी बातें–
कथा सुन कर संबंध वालों में ऐसी आत्मीयता रखने अग्रसर हो रहे हैं।
पर,
जो वैसा वर्तता होगा या वर्तने की कोशिश में होगा
उसे ही पता चलता होगा कि कितना कठिन है यह !
यह है पू. कांतिकाका की एक अनोखी विशेषता–
जिसके कारण आज हमारा सारा गुणातीत समाज
उनकी 75वीं जन्म जंयती मनाने के लिए उत्साहित है।
आजीवन प्रभु की– गुणातीत स्वरुपों की परछाई बन कर रहे
पू. कांतिकाका के परिवार पर
इन **विभूतियों का पहले से ही एक निजी अधिकार–अपनापन दिखाई देता है।**
पू. बा ने एक प्रसंग बताया था–
पू. कांतिकाका खूब छोटे थे
और तब
पू. शास्त्रीजी महाराज जब-जब वीरसद (गांव) आते
व
पू. बा उनके दर्शन के लिए जाते
तथा

पू. कांतिकाका प.पू. स्वामिश्री के पांव छूने जाते और मिलते तो–
प. पू. स्वामिश्री उन्हें बुला कर खूब प्यार करते
व
उनकी जेब में चिट्ठी रख देते।
पू. बा भी समझ जाते कि प. पू. स्वामिश्री ने पैसे मंगाए होंगे।
और वो कागज़ में वही बात होती।
साथ में लिखा भी होता था कि और कहीं से सेवा आएगी
तब यह वापिस भेज दूँगा।
लेकिन,
दोबारा जब आते तब दूसरी चिट्ठी आ ही जाती कि–
पिछली बार लिए गए पैसों को तुम्हारी सेवा में गिन लिया है
और
अब की जो मंगा रहा हूँ वो दूसरे फेरे में लेता आऊँगा।
पू. शास्त्रीजी महाराज का ऐसा चरित्र चलता ही रहता......
और
प.पू. काकाश्री ने भी उनके साथ ऐसे चरित्र किए–
'कांति अभी इतने दे दो–फलांने की सेवा आने वाली है,
वह आए तो उसमें से तू ले लेना'।
लेकिन फिर–
वह रकम भी वेव ऑफ ही कर दी जाती !
कई–कितनी बार हम में से कितनों ने यह देखा भी है।
पू. कांतिकाका कोई इतने भोले नहीं थे कि जो–
स्वरुपों को ऐसा नटखट समझते।
लेकिन, यह था उनका स्वरुपों के साथ का एक
आत्मीय संबंध– अपनापन निर्दोषभाव !
वर्ना, **पू. कांतिकाका** थे तो खूब **'कुशाग्र बुद्धि'** और
इसी लिए प.पू. काकाश्री कहते कि–
'कांति तो मुंबई का ताबूत निकाले ऐसा है'।
शायद यही वजह होगी कि वे प्रभु को पसंद आए !
महाराज को कुशाग्र बुद्धि वाले खूब पसंद हैं ना !
ऐग्री कम्पनी फूंक गई फिर पू. कांतिकाका ट्रान्सपोर्ट का काम करने लगे।
एक बार फॉरन की एक बड़ी मशीन समुद्र मार्ग से आई
और
उसे एक फैक्ट्री में कोई ऐसी जगह रखनी थी कि–
उसके लिए जमीन में उसके नाप के किए गड्ढे में उतारनी थी।
मशीन इतनी भारी थी कि
उस समय की मुंबई की सभी विख्यात ट्रान्सपोर्ट कंपनियों ने
मशीन और उसको रखने की जगह देख कर
उस काम को असंभव जैसा बता दिया।
और....
नौबत यहां तक पहुँची कि मशीन अब वापिस ही
भेज दी जाये।
पू. कांतिकाका को इस बात का पता चला।
वे वहां पहुँच गये।
मशीन व उसको रखने की जगह देखी,
थोड़ी देर कुछ सोच कर उसके मालिकों को कहा कि–
परसों शाम तक मैं इस मशीन को उसकी जगह रखवा दूँगा।
लेकिन, इसके 30 हजार रुपये लगेंगे।
यह बात थी सन् 57-58 की।
पू. कांतिकाका खूब चालाक, सो– उन्होंने उसका लिखित कॉन्ट्राक्ट भी करवा लिया।
मालिकों ने भी मशीन टूटे-करे नहीं
उसकी गारंटी लिखवा ली।
और.....दूसरे दिन सुबह से पू. कांतिकाका ने
उस गड्ढे में बर्फ की सिल्लीयों पर सिल्लीयाँ डलवाने की शुरुआत कर दी।
सभी देखते ही रह गये.....
पहले तो किसी को ख्याल ही नहीं आया कि ये क्या कर रहे हैं?
सारा गड्ढा बर्फ से भर कर जमीन से समतल हुआ तब–
क्रेन से मशीन बिल्कुल उसके ऊपर रख दी।
धीरे-धीरे बर्फ पिघलती गई
और...... दूसरे दिन शाम तक में मशीन गड्ढे में उतर गई !
ऐसा था उनका दिमाग !
लेकिन, स्वरुपों और उनके संबंध वालों को
उन्होंने केवल 'ये हमारे'–ऐसे एक कुटुंबभाव से ही निहारा।
हम आत्मीयता की इतनी-इतनी बातें सुनते हैं तब जाकर
मुश्किल से उस दिशा की ओर लड़खड़ाते हुए चलते हैं।
जबकि, **जो-जो पू. कांतिकाका के परिचय में आए होंगे,**
अरे ! उनको देखा होगा
उनको वे **सहज ही आत्मीय लगे ही होंगे–**
अपने ही लगे होंगे।
वह परिवार ही मानो अपना एक घर ही है ऐसा लगा ही होगा।
वहां कोई क्षोभ नहीं हुआ होगा।
परायापन नहीं लगा होगा, बल्कि वहां भीतर में अपने आप एक हक मना गया होगा !
अपनेपन की भावना से ही उन्होंने कई–कितनों को **डाँटा** भी होगा, परन्तु उसमें भी **उनकी आत्मीयता ही छलकती नज़र आई होगी।**
वर्षों पहले की बात है।
हम सत्संग में नए-नए ही आए थे और गोंडल के उत्सव से वापिस आ रहे थे।

उस समय गोंडल से मुंबई आने के लिए
अमदाबाद स्टेशन पर गाड़ी बदलनी पड़ती थी।
मुंबई के हम सब साथ में ही थे।
लेकिन, उस समय अब की भाँति तब के थर्ड क्लास में रिज़र्वेशन या ऐसा नहीं होता था
व
वेकेशन का या ऐसा कोई समय होगा, सो गाड़ी में कोई जगह नहीं मिल रही थी।
हम जगह ढूंढने के लिए प्लेटफार्म पर घूमा करते थे।
अचानक पू. कांतिकाका की नज़र हम पर पड़ी।
वे एकदम कड़े होकर बोले-
'क्या घूमा करते हो? चढ़ जाओ इस डिब्बे में
और
टी.टी. पूछे-करे तो मैं वहां बैठा हूं, मेरे पास भेज देना'— कह कर सामने फर्स्ट क्लास का डिब्बा था उसमें बैठ जाने हमें कह दिया। तब से मेरे मन में उनकी एक ऐसी छबि बैठ गई कि भले कड़े हैं—
पर हैं अपने
और
उन्होंने सच में सारा सत्संग अपना ही गिना है।
वर्ना, हम तो नए-नए हैं और पैसे-टके वगैरह से भी संपन्न नहीं हैं
फिर भी हमें कितना अपना ही माना !
मुझे ठीक से याद है—
उन्होंने उस समय ब्राऊन कलर का गरम कोट पहना हुआ था और......वही कोट
पू. वासुदेवभाई (पू. ज्ञानस्वरूपस्वामी-बड़े) साधु होने मुंबई से निकले
तो उन्हें जब स्टेशन छोड़ने आये थे, तब भी पहना हुआ था !
उनकी इस **आत्मीयता में या कुटुंबभाव में बहता था— निरपेक्षभाव** !
और इसी लिए तो
आखिर तक सरदार पटेल की तरह वे 'स्पष्ट वक्ता' रहे।
और तभी तो पू. काकाश्री कहते—
'कांतिकाका सत्संग के सरदार हैं'।
'एग्री' कम्पनी बंद हो गई और **'56 के बाद तो प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी सत्संग की प्रवृत्तियों में ही प्रवृत्त रहते.....**
ताड़देव में कथावार्ता, भजन-कीर्तन का अखाड़ा चलता रहता। सुबह 6.00 बजे से रात को 11.00 बजे तक **हरिभक्तों का आना-जाना** लगा रहता।
उन सब की माहात्म्ययुक्त सेवा—खातिर में ये दोनों परिवारों के सेवक लगे रहते।
और उन सब के लिए **कमाने वाले थे एक 'पू. कांतिकाका'**!
ऑभान ट्रान्सपोर्ट में महीने की 400 रुपये की तनख्वा पर वे सर्विस करते
और
साथ ही दूसरे काम करके गाड़ी खींचते।
मुझे याद है सुबह सात बजे के करीब वो घर से निकल जाते और रात को 11 बजे देर तक घर वापिस आते।
सहजावस्था की—स्थितप्रज्ञ अवस्था की बातें हम सुनते हैं।
लेकिन कैसी सहजावस्था होगी यह कि-
जिसने लाखों रुपयों की उथल पुथल का व्यापार किया— कमाया और खोया
व
उसे ही 400 रुपये की नौकरी करनी पड़े !
फिर भी, जिसे स्वरूप माना उसके प्रति रंचमात्र भी भावफेर नहीं—धोखाधड़ी भी नहीं या उलाहना भी नहीं कि—
सर्वस्व आपको अर्पण करके बैठे हैं तब भी हमारा ऐसा....?
इतना ही नहीं बल्कि
प्रभु मिलने की मस्ती में भी तनिक भी कमी नहीं।
यह थी उनकी 'स्वरूप की स्थितप्रज्ञता'!
ऐसे समय में पू. बा जैसे भी खर्चे में बचत करने
सप्ताह की एक साथ सब्जी लेने बस में (मुंबई की)
भायखला की बड़ी सब्जी मार्किट में जातीं।
दोनों परिवारों की रसोई 6/डी सोनावाला बिल्डिंग में एक जगह ही बनती।
पू. ललिताकाकी रसोई बनाने-करने सुबह शाम ऊपर जातीं
व
रात को वापिस आते हुए पू. कांतिकाका की थाली लेकर आतीं;
जो पू. कांतिकाका रात को घर आकर खा लेते।
एक बार ऐसा हुआ कि पू. कांतिकाका रात को कुछ
ग्यारह-सवा ग्यारह बजे 8/सी में घर आये—
सोफे पर बैठे और बोले—'लाओ खाना'।
जैसे ही उनकी आवाज़ रसोई में बैठी पू. ललिताकाकी ने सुनी, वो एकदम बोल उठीं—
'ऑय माँ, ऊपर से तुम्हारी थाली लाना तो मैं भूल ही गई !
मैं वहीं बैठा हुआ था।

मुझे हुआ, अभी पू. कांतिकाका कुछ बोलेंगे।
लेकिन, कांतिकाका थोड़ी देर तो चुप बैठे रहे
और
मेरी ओर देख कर बोले–चल आना है? हम घूम आएं।
मैं उनके साथ गाड़ी में गया....रास्ते में इधर-उधर की बातें जरुर करी,
लेकिन उस बात के बारे रोष का कुछ एक भी शब्द नहीं बोले।
मरीनड्राईव पर हमने सेन्डवीच और ऐसा कुछ खाया-करा
और
मुझे घर छोड़ कर निकल गए !
खूब सोचने जैसी यह बात है।
जो सभी के लिए खुद सारा दिन लगा रहता हो,
अपनी पत्नी घर का काम छोड़ कर
रसोई बनाने-करने सारा दिन ऊपर लगी रहती हो
और
रात को खुद जब थके-हारे घर आएं तब
उनके खाने का कोई ठिकाना ना हो,
फिर भी किसी के प्रति कोई भावफेर नहीं !
उनके जीव में सत्संग के प्रति यह कैसा दिव्यभाव होगा?
और फिर भी सब–
उन्हें व्यवहारिक बुद्धिवाला और व्यवहार में डूबा हुआ ही मानते।
क्योंकि–
6/डी के सत्संग में या भजन-कीर्तन में वे बहुत नज़र नहीं आते थे ना !
और इसलिए–
दूसरे हरिभक्तों की अपेक्षा उनका मूल्यांकन कम आँका जाता।
अभी सांकरदा मंदिर में प.भ. मगनकाका रहते हैं।
पू. कांतिकाका के पास वे ट्रान्सपोर्ट कम्पनी में काम करते थे।
कुछ भूल होने के कारण पू. कांतिकाका ने उनको डाँटा
और
इस बात का ताड़देव में बहनों को पता चला।
ट्रान्सपोर्ट कम्पनी उस समय बहनों के नाम से चलती थी।
और..... बहनों ने कथावार्ता सुनी थी–
‘देह के संबंधी से अधिक विशेष भगवान के भक्त का
पक्ष रखना चाहिए, वगैरह-वगैरह’।
यह ज्ञान बीच में आकर खड़ा रह गया !
और
स्वाभाविक है कि ऐसे वर्ताव से हमारी वाह-वाह भी होती !
सो–
सुबह पू. कांतिकाका ऑफिस की चाबी लेने ऊपर गये
(तब ऑफिस की चाबी वे रात को ऊपर ताड़देव मंदिर छोड़ जाते और सुबह लेकर निकलते थे)
और
बहनों से चाबियाँ माँगी तो बहनों ने वह देने के लिए मना कर दी !
प.पू. काकाजी या प.पू. पप्पाजी को कुछ भी फरियाद किये बिना
या
प.भ. मगनभाई पटेल की गल्ती को बताकर,
खुद का बचाव किये बिना
या
उन बहनों के प्रति भी भावफेर किये बिना
पू. कांतिकाका चुपचाप सीढ़ियाँ उतर गए....
और
दोपहर को सब कुछ ठीक होने के बाद वापिस आकर
ऑफिस खोला....
हमारे साथ ऐसा प्रसंग बना हो तो?
अहम् को कैसी चोट लग जाए?
खुद सर्वोपरि समझदारीयुक्त जीता हो और सत्संग में लल्लू जैसों के सामने दीनभाव से वर्ते....
ऐसा सेवकभाव और महिमा ऐसे प्रसंगों से उनके जीवन प्रवाह में स्पष्ट दिखाई पड़ता है।
बार-बार हाथ जोड़कर घूमा करे.....‘पहले आप-पहले आप’ किया करे.... झुकता ही रहे
उसमें सेवकभाव का दिखावा जरुर है।
पर, आंतरिक सेवकभाव और महिमा ऐसे वर्तने से कभी कभार नज़र आता है।
प.पू. काकाश्री विदेश थे और प.पू. स्वामिश्री दिल्ली पधारे थे–
हमें ‘बाई कार’ लुधियाना जाना था।
पू. कांतिकाका भी साथ थे।
वे तो ड्राइविंग सीट पर बैठ गये।
मुझे तो ऐसा था कि पीपली (कुरुक्षेत्र) तक
पू. कांतिकाका भले चलाएं
फिर सेवक को गाड़ी सौंप देंगे।
लेकिन,
उन्हें प.पू. स्वामिश्री की ऐसी महिमा कि उस उमर में
लुधियाना तक उन्होंने ही गाड़ी ड्राईव करी
और तब
पीपली रेस्ट हाउस के बाहर नाश्ता करते हुए बोले भी कि–
यह गाड़ी जो चला रहा हूँ–मानो पू. काकाजी की ही चला रहा हूँ,

लुधियाना तक मैं ही खींच लूँगा !

यह था उनका सर्वदेशीय सेवकभाव !

लेकिन, प.पू. काकाश्री के स्वधाम पधारने के बाद कहते–

'आणंद या वडोदरा से मुंबई बाई कार जाते हुए काकाश्री हमेशा मेरे साथ होते.....अब वसाई के उस ब्रीज से गाड़ी लेकर आता हूँ, तब काकाश्री के नहीं होने पर दिल भर आता है कि वर्षों का वह साथ छूट गया.....'

और

यह बात करते हुए उनकी आँखें छलक जाती।

सच में,

प.पू. काकाश्री के स्वधाम पधारने की कमी सबसे अधिक उन्हें महसूस हुई।

मैंने उनकी आँखों में आँसू कभी नहीं देखे थे,

सिवाय–'86 के मार्च के बाद मुझे मिलते और–

पू. काकाश्री की बात कि–

'बृहद् गुणातीत समाज की एकता के लिए–सर्वदेशीयता के लिए उन्होंने जो कसनी सही और आखिर अपना बलिदान भी दे दिया, फिर भी हममें से कोई समझ नहीं'–

इस संदर्भ में जब-जब बात करते तब उनकी आँखें भर आती !

बेशक, प.पू. काकाश्री के स्वधाम पधारने के बाद ताड़देव के भाईयों को

और

प.पू. काकाश्री को प्रत्यक्ष मान कर उनके होकर जीने वाले मुक्तों को उनकी कमी महसूस ना हो, सो उनमें वे रसबस हो गए।

इतना ही नहीं–

पू. काकाश्री के साथ जैसा मेरा

क्षोभरहित का संबंध था वह उनके साथ भी हो जाये

और

पू. काकाश्री की यूं भी कमी ना लगे इस हेतु

अपना बड़प्पन एक ओर रख कर

वे खूब मित्रता से–अरे ! सेवकभाव से भी सहज वर्तते !!

एक बार मैं ताड़देव से सेन्ट्रल स्टेशन जाने के लिए 6/डी के नीचे गाड़ी में बैठा था और गाड़ी में सामान लग रहा था।

पू. कांतिकाका और ताड़देव के भाई भी वहाँ गाड़ी के पास खड़े थे।

इतने में सौ. नयना मर्चंट ने पू. कांतिकाका के साथ मुझे एक चिट्ठी भिजवाई।

पू. कांतिकाका ने मुझे वह सहजभाव से दी।

हालाँकि–

पू. कांतिकाका के साथ यूं चिट्ठी भेजनी मुझे पसन्द नहीं आई,

परन्तु–कोई सेवक ने शायद सुना नहीं होगा–यूं सोच कर मैंने वो चिट्ठी चुपचाप पढ़ ली।

अक्षरज्योति की बहनों के लिए भेजी वस्तुओं की वह लिस्ट थी।

फिर मैंने देखा तो पू. कांतिकाका एक सेवक की अदा से गाड़ी की खिड़की के पास खड़े थे !

मुझे हुआ शायद पू. कांतिकाका को मुझे कुछ कहना होगा।

सो–

मैं गाड़ी का दरवाजा खोलने लगा।

तब पू. कांतिकाका बोले–

तुम्हें उसे कुछ जवाब लिखना करना हो, वह पहुँचाने के लिए खड़ा हूँ !!

मैं तो आवाक् होकर पू. कांतिकाका को देखता ही रहा।

पानी-पानी हो गया।

क्या जवाब दूँ ?

पर, उनके ऐसे जेस्चर में छुपा था पू. काकाश्री के प्रति का 'प्रेम'!

यूं प.पू. काकाश्री के संबंध से सभी को संभालते रहते, लेकिन- प.पू. काकाश्री के विरह का दुःख वो स्वयं झेल नहीं ही पाए

और

'86 की नवम्बर में तो.....वे सिधार गए !

तो,

आज जब 'बंधुमैत्री महोत्सव' के उपलक्ष्य में

हम पू. कांतिकाका का अमृतपर्व मनाने जा रहे हैं तब-

सारा ही गुणातीत समाज भावात्मक एकता से

एकाकार होकर रहे

ऐसा दृढ संकल्प करें, सभी भेद भूला कर उस दिशा की ओर अग्रसर हों यही–

पू. कांतिकाका ने जो कुछ किया–सहा–परिश्रम किया उसका हमने ऋण चुकाया कहा जाए !

महाराज–स्वामी, सभी गुणातीत स्वरूप–

और

विद्यमान प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. भाई तथा प.पू. दिनकरभाई हम सभी में अंतःकरण के पार के इस विचार को पकड़ने की सुरुचि प्रगटाएं–यही प्रार्थना !

–प.पू. गुरुजी

✡✡✡✡✡

ब्रह्मप्रवाह

विकास बहुत हुआ

कोई भी प्रवृत्ति, आदर्श या कर्तव्य की साधना के लिए
जो भी प्रयास होते हैं उस बारे
भिन्न-भिन्न समाज अपने-अपने मंतव्यों के मुताबिक
उसकी महत्ता को आँकते हैं—समझते हैं।
सार्वजनिक जीवन में तो आँकड़ों की गिनती से
सब अधिकता या न्यूनता समझते हैं।
व्यवहारिक बड़प्पन और आध्यात्मिक बड़प्पन में
अत्यधिक भेद व फर्क है।
इसे विचारक या विवेकी तुरन्त ही समझ सकते हैं
और
उसी को लेकर सत्संग की प्रवृत्तियों का विकास
या
सत्पुरुष के सच्चे बड़प्पन एवं उनसे होते विकास का भी
अपने-अपने अंग, ज्ञान और अनुभव के मुताबिक
हर कोई अनुमान—अटकलें बांधते हैं
और
उसी में झूलते हैं व अन्यों को भी उसी दिशा में अग्रसर करते हैं।
ऐसी अटकलें—सूक्ष्म बातों में तो
तत्कालीन सत्पुरुष के वचन से हुए निर्णय ही
उस समय सर्वोपरि माने गये हैं
और
वही समाज दिव्यानंद प्राप्त करने सरलता से अग्रसर होते रहे हैं।
श्रीजी महाराज के संबंध में आए अनपढ़, गरीब मुमुक्षुओं में
थोड़े से समय में जो बदलाव आया उससे यह प्रतीत हुआ है।
ऊपरी-ऊपरी तौर से सोचेंगे तो,
व्यवहारिक बुद्धि वाले को—
बड़े-बड़े समाज व राजा-महाराजा सत्संगी बनें,
भव्य समारोह हों,
यज्ञ करते हुए हजारों ब्राह्मण मंत्रों की आहूति देते हों,
जैसे कि—'डभाण' के यज्ञ के समय महाराज ने
लगातार अट्ठारह दिन तक
लाखों लोगों को भोजन करवाया
और
सत्संग के नियम देकर भजन भक्ति में जोड़ा,
यूं हो तब—
सचमुच विकास हुआ,
सत्संग बहुत ही बढ़ गया,
'न भूतो न भविष्यति' जैसा हुआ
यूं सभी बोलें, मानें, बातें करें
और
अन्यों को भी मनवायें।
जबकि आध्यात्मिक दृष्टि वाले के मत से तो
ऐसा करोड़ों राजाओं, लाखों लोग मानें या ना मानें,
परन्तु सत्य तो सत्य ही रहेगा
और
कोई भी श्रेयार्थी जीव इसका जीतेजी अनुभव कर सकता है।
यह अनुभूति कालातीत, भावातीत और गुणातीतभाव वाली महसूस होगी
व
शाश्वत् रहती है
और तब—
आध्यात्मिक अनुभव करने वाले साधक, भले थोड़े ही जुड़े हो
पर वही अत्यंत विकास हुआ कहा जाये
और
जैसे हैं वैसे तत्व से आत्मा-परमात्मा के स्वरूप का
मूल ज्ञान हुआ!
इसे सत्संग अत्यंत बढ़ गया यूं वे कहे, माने
और
दूसरे को भी वैसे समझ कर उसी निगाह से देखने प्रेरणा देते हैं।
यूं दोनों विचारधारायें सार्वजनिक जीवन में प्रचलित रहती हैं।
पर, प्रश्न यह उठता है कि—
क्या एलेग्ज़ेन्डर सच में महान था?
क्योंकि उसने बड़े-बड़े देश जीते,
अपनी हुकूमत के नीचे कई राजाओं को रखा,
कईयों को झुकाया
और
लाखों लोगों को काबू किया!
या ऐसा वैभव होते हुए भी
काल-कर्म-माया से भयभीत
एवं
क्षणिक ही जीने का अहसास करता
व
आत्मज्ञान के लिए किसी महात्मा के पास घुटने टेकता एलेग्ज़ेन्डर बड़ा?
यूं व्यवहारिक और सत्यज्ञान की दृष्टि
बिल्कुल ही अलग होती है।
जगत के बड़े,

सत्संग में पामर गिने जाते हैं
और
सच्चे संत के सेवक—
त्रिलोकी को जीतने वाले से अधिक सामर्थीयुक्त
व
सौभाग्यशाली माने जाते हैं।
शास्त्रों एवं सत्पुरुषों के ये सिद्ध वचन हैं।
तो अब,
जैसे मुक्तानंदस्वामी को महाराज ने प्रश्न पूछा था—
सच्चा विकास क्या और सत्संग सच्चा कितना बढ़ा?
और जैसे कि उत्तर था कि—
हम किस प्रकार के सत्संगी हुए हैं?
कैसी समझदारी से हमने वर्तना शुरु किया है?
व
दूसरे किसी का दोष-स्वभाव-प्रकृति देखना ही नहीं—
यूं वर्ता जाता है या नहीं?
ऐसे उत्तम प्रकार के सत्संग के बारे अब हमें भी सोचना है
व
यह बात हम पर अब भी लागू होती है।
वहां कोंग्वा में शशिकांतभाई, बेचरभाई वगैरह की हाज़िरी में
पू. स्वामिजी (योगी बापा) ने श्री हरमानभाई को
'विकास बहुत हुआ'—उसका जो अर्थ समझाया था
उस पर सभी को विचार कर लेने जैसा है।
सो, जानकारी के लिए निम्न दिया है......
प.पू. स्वामिजी बोले—
'विकास बहुत हुआ'—'सत्संग बहुत बढ़ गया'—उसका सच्चा
अर्थ इतना ही है कि—
हमारा देहभाव—जीवभाव कितना टला?
कौन-कौन सी आसक्तियाँ टलीं?
भगवान का कितना मनन-चिंतन होता है?
या
व्यवहार का व्यापार वगैरह का कितना?
उसका निरीक्षण करना।
जरूरी हो वह काम कर लें,
पर
बाद में उसका मनन-चिंतन नहीं हो।
पूंछ मचेड़ कर खड़े करे पशु की भाँति
व्यवहार में जबरन बरत पाये।
सो,
समझदारी बढ़े,
स्वरूपनिष्ठा दृढ़ हो
और
सत्पुरुष की ही मर्जी मुताबिक बरतना आ जाए—
तब जानना कि—
विकास बहुत हुआ,
सही मायने में सत्संग बढ़ा
और
पक्की निष्ठा होने पर (कांच के बरतनों की भाँति)
संभालने ना पड़े, बुरा ना लग जाये
और सभी अपनी-अपनी फर्ज़ समझ कर,
सत्संग के मालिक बन कर काम करते हो जाएं।
जितनी ज्ञाननिष्ठा दृढ़ हो, उतना विकास हुआ गिना जाए
और
तब ही देहाभिमान टलता जाए।
तो, जितना जीवभाव टला उतना सत्संग बढ़ा।
सो, सभी को यूं लग पड़ना है
और
गुणातीत ज्ञान सीख कर, आचरण में लाकर
सभी के लिए आदर्श रूप बनना है।
प.पू. शास्त्रीजी महाराज ने जो परिश्रम किया
उसमें सभी को कसनी में लिया था
और
अल्प संबंध वाले जीव को भी बल दे दिया।
सो, कसनी सहें लेकिन दे नहीं
और
सत्संग की सभी प्रवृत्तियों में गुणबुद्धि (दिव्यभाव) रख कर
जो अपना फर्ज़ अदा करता रहे,
वह विकास खूब करा पायेगा।
सो,
बड़े पुरुषों की ही मर्जी में साथ देकर,
अभिप्राय जान कर वैसा ही कार्यक्रम रखना।
तो,
देखते ही देखते एकांतिकभाव दृढ़ होने लगेगा।
और
दूसरे सभी को भी संत के प्रति सद्भाव बढ़ कर,
वे स्वामिजी के आश्रित होंगे
व
ब्रह्म एवं परब्रह्म के स्वरूप का सच्चा ज्ञान जीतेजी
प्राप्त करते जायेंगे।
ऊपरी बताई दिव्य बुद्धि
स्वामिश्रीजी सभी को दें यही नम्र प्रार्थना !

—प.पू. काकाजी महाराज
फरवरी, 1960

✡✡✡✡✡

'बस......... भजन का ही उपाय लेना है !'
'थीस टु शॅल पास.........'

समग्र गुणातीत समाज के हरिभक्तों को लगभग यह खबर मिली ही होगी कि उत्तर भारत के हमारे सब के प्राणपुरुष **प.पू. गुरुजी** को 15 दिसम्बर '97 को चेस्ट पेन के कारण यकायक अस्पताल में आई.सी.यू. में एडमिट किया था....... अचानक बनी इस घटना से सभी का डिस्टर्ब हो जाना स्वाभाविक ही था क्योंकि 1968 से दिल्ली आने के बाद प.पू. गुरुजी पहली बार यूं अस्पताल में एडमिट हुए...... कईयों को शायद हम यह खबर नहीं पहुंचा पाए, उसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं.... आप सभी की जानकारी हेतु 'भगवत् कृपा' के इस अंक में विस्तृत रूप से उल्लेख कर रहे हैं.......

वैसे पिछले 8-10 दिन से प.पू. गुरुजी अधिक थकान व चेस्ट में लगातार हल्का पेन महसूस कर रहे थे, लेकिन यूं ही सोचते रहे कि शायद अधिक ठंड के कारण, हाई बी.पी. या गैस की प्रॉब्लम से हो रहा है। पर, जब प.पू. गुरुजी ने ही कृपा करके स्वयं बताया कि यह इन सब कारणों की वजह से नहीं, बल्कि कुछ हार्ट की तकलीफ मुझे महसूस हो रही है। तो, टेस्ट कराने पर पता चला कि उन्हें हार्ट में एन्जाईना पेन की तकलीफ आई है। सो, 15 दिसम्बर '97 दोपहर 12.30 पर दिल्ली मंदिर के निजी डॉ. मुकेश भाटिया व डॉ. वर्षा भारद्वाज के निर्देश अनुसार **'खोसला अस्पताल'** में आई.सी.यू. में एडमिट कर दिया गया...... आई.सी.यू. में प.पू. गुरुजी की चेस्ट पर, हाथ पर सब इन्स्ट्रूमेन्टस लगे देखकर कई तो अपने आसूं नहीं रोक पाए कि–जिनको कभी इन्जेक्शन लगवाते नहीं देखा वे आज...... तीन दिन तक आई.सी.यू. में दवाईयाँ इत्यादि देकर उनके दर्द को कन्ट्रोल कर दिया गया। 18 दिसम्बर '97 की दोपहर को करीब 12.00 बजे प.पू. गुरुजी को रूम में शिफ्ट किया और सारी जाँच-पड़ताल शुरू हुई.......

आखिर में यही तय हुआ कि सर्वप्रथम प.पू. गुरुजी की एन्जोग्राफी करवाई जाए, तभी ठीक से कुछ पता चल पायेगा। प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के परिचित मुंबई में हमारे आत्मीय स्वजन समान डॉ. मांडके ने 1989 में एक बड़े भाई के नाते बहुत ही अच्छी सलाह देकर पू. दीदी का हार्ट ऑप्रेशन किया था..... **सो, प.पू. गुरुजी का डॉ. मांडके पर अत्यधिक भरोसा होने के कारण** उन्हीं की सलाह से प.पू. पप्पाजी का आशीर्वाद लेकर प.पू. गुरुजी 21 दिसम्बर '97 की शाम को 7.00 बजे की फ्लाईट से मुंबई के लिए रवाना हुए..... एयरपोर्ट पर पू. ज्योति बहन, ताड़देव के योगेश्वर, मुंबई के कई हरिभक्त और एक अलग लगाव के वश प.भ. घनश्यामभाई अमीन, सौ. इला भाभी व प.भ. नीलकंठभाई प.पू. गुरुजी को रीसीव करने पहुँच गए थे। रात को ही मुंबई के **'लीलावती अस्पताल'** में प.पू. गुरुजी को एडमिट कर दिया गया......

22 दिसम्बर '97 की सुबह 'लीलावती अस्पताल' में ही 9.00 बजे के करीब डॉ. दलाल ने प.पू. गुरुजी की एन्जोग्राफी शुरू करी.... डॉ. मांडके स्वयं उस समय वहीं मौजूद रहे और.... सभी ने भजन करना भी शुरू कर दिया। पौने दस बजे के करीब तो एन्जोग्राफी में पता चल ही गया कि प.पू. गुरुजी की दो आर्टरी में ब्लॉकेज़ है। सो, डॉ. मांडके ने तुरन्त निर्णय ले लिया कि प.पू. गुरुजी की **'बाईपास'** सर्जरी अभी ही करनी जरूरी है...... और वहाँ मुंबई में प.पू. गुरुजी ने डॉ. मांडके को यही कहा कि जैसा प.पू. पप्पाजी कहें। फिर दिल्ली में मौजूद प.पू. पप्पाजी ने मुंबई फोन से प.पू. स्वामिजी से भी बात करी व 24 दिसम्बर '97 को प.पू. गुरुजी का ऑप्रेशन करने का निर्णय लिया गया........और प.पू. पप्पाजी मुंबई पहुँच गये।

प.पू. पप्पाजी दिल्ली से खास मुंबई जब पहुँचे, तो सेवकों ने व प.पू. गुरुजी ने भी कहा कि आप यहाँ तक ऐसे क्यों आये? आप तो वहीं से संकल्प से आशीर्वाद भेज देते और वैसे भी हम आपको सुबह, दोपहर, शाम फोन से इत्तला भी करते रहते। सुनते ही प.पू. पप्पाजी बोले **'मुकुंद की बात थी, सो मैं आया, वर्ना भले ही कैसा भी चमरबंदी (धनवान) होता तो मैं थोड़े आता'?** यह है प.पू. पप्पाजी का जीवन प्रवाह......

दूसरी ओर प.पू.काकाजी आज भी कैसे प्रकट है, उनका ज्ञान आज भी कितना शाश्वत हैं वह इस प्रसंग से पता लगता है। 21 दिसम्बर '97 रात को सांताक्रुज एयरपोर्ट पर प.पू. गुरुजी उतर कर प.भ. ओ.पी. अग्रवाल जी की गाड़ी में बैठे, तो प.भ. अग्रवालजी ने प.पू. गुरुजी को प.पू. काकाजी की बातें पसंद हैं–यूं समझ कर जैसे ही टेप चलाई ; तो टेप का पहला ही वाक्य था—'मने ऑप्रेशन करवा देजो, लात नहीं मारता....' यानि-मुझे ऑप्रेशन करने देना, लातें नहीं मारना। यह सुनते ही प.पू. गुरुजी उसी समय समझ गए कि ऑप्रेशन तो कराना ही पड़ेगा।

ऑप्रेशन से पहली रात यानि–23.12.97 को प.पू. पप्पाजी व प.पू. स्वामिजी जब प.पू. गुरुजी को आशिष प्रदान करने गये, तब प.पू. पप्पाजी ने प.पू. गुरुजी को तीन बातें करी–
1. कोई एक्साईटमेन्ट में नहीं जाना,

2. कोई कल्पनाओं में नहीं रहना
और
3. ऑप्रेशन कब हो जाएगा, तुझे पता भी नहीं लगेगा।
प.पू. स्वामिजी ने भी प.पू. गुरुजी के सिर को अपने सीने से लगाकर बहुत प्यार किया
और
टीका करके कहा—'सब एकदम अच्छा ही हो जाने वाला है'। तब प.पू. गुरुजी का दिल भी खूब भर आया.....

प.पू. गुरुजी के ऑप्रेशन की खबर सुनते ही सोखड़ा से पू. कोठारीस्वामिजी तथा पू. योगीस्वामिजी, सांकरदा के संत पू. विज्ञानस्वामी और पू. भक्तवत्सलस्वामी और समढ़ियाळा से पू. निर्मलस्वामिजी के सेवक भी प.पू. गुरुजी को मिलने आ गए थे।

24 दिसम्बर की सुबह प.पू. गुरुजी के ऑप्रेशन से पहले पू. स्नेहलस्वामी, पू. ज्योति बहन, पू. डॉ. नीलम बहन, पू. डॉ. वीणा बहन, दिल्ली से गए सेवक प.भ. पुनीतजी (पानीपत वाले), प.भ. अनुज भईया, प.भ. पवन खण्डेलवाल, प.भ. ऋषि, प.भ. चिराग, प.भ. विजय, पू. दीक्षा दीदी, सौ. शोभना भाभी, ताड़देव के योगेश्वरों में से पू. भरतभाई, पू. बापू, पू. वशीभाई, मुंबई के हरिभक्तों में डॉ. महेन्द्र मर्चंट, प.भ. ओमप्रकाश अग्रवालजी, प. भ. गौतमभाई शाह, प.भ. श्रेयसभाई, प.भ. समीरभाई, प.भ. भाविनभाई, प.भ. अनिलभाई माणिक एवं मंडल,अमदावाद से प.भ. उदयभाई, प.भ. शैलेषभाई, प.भ. जीतेन्द्रभाई (मामू), प.भ. दिलीप कुमार इत्यादि मौजूद थे। साथ ही दिल्ली के सौ. वर्षा संघवी भी उनके भाई प.भ. अनिलभाई भिण्डे का घर 'लीलावती अस्पताल' के सामने होने के कारण वहाँ पहुँच गए थे। प.भ. अनिलभाई भिण्डे व उनकी पत्नी सौ. काश्मीरा भाभी बिना किसी परिचय के जिस आत्मीयता से प.पू. गुरुजी व सभी सेवकों के लिए जो सेवा कर रहे हैं, उससे ऐसा ही लगता है कि उनका पुराना ही कोई परिचय है और.....सच ! उनकी यह सेवा जरुर अक्षरधाम में लिखी गई है क्योंकि जाने-अनजाने में भी ऐसे निर्गुण संत के लिए करी गई सेवा भगवान साक्षात् ग्रहण करते हैं और इसके फलस्वरूप प्रभु उनके जीवन में सुख, शांति, आनंद प्रकटा ही देंगे। दूसरी ओर—अक्षरज्योति की सभी बहनों से दूर रहते हुए, पू. दीक्षा दीदी मुंबई के इस अल्प परिचित परिवार से मिलजुल कर हंसते हुए प.पू. गुरुजी के लिए खाना बनाने की जो सेवा कर रही हैं, उससे उन पर प.पू. गुरुजी खूब प्रसन्न हैं....

24 दिसम्बर' 97 की सुबह 6.15 के करीब प.पू. गुरुजी को ऑप्रेशन के लिए ले जाया गया और 7.00 बजे के करीब ऑप्रेशन शुरु हुआ। 9.15 तक प.पू. गुरुजी का ऑप्रेशन चला व 10.15 तक सारी प्रक्रिया पूरी होने के बाद प.पू. गुरुजी को आई.सी.यू. में रखा गया.....

सच, इन स्वरुपों के आशीर्वाद से प.पू. गुरुजी को तो पता ही नहीं चला था कि उनका ऑप्रेशन कब हो गया और....यूं सभी संतों, भक्तों, बहनों, भाभियों की तीव्र व परिताप की प्रार्थना से प.पू. गुरुजी का ऑप्रेशन खूब अच्छी तरह सक्सेसफुल हो गया व रीकवरी भी खूब जल्दी होने लगी है.....

प. पू. साहेब की तबियत नादुरुस्त होने के कारण उनकी खूब इच्छा होने के बावजूद भी वे मुंबई तो नहीं आ पाये, परन्तु फोन से लगातार पूछते रहते और डॉ. सनंदभाई इसी वजह से मुंबई रहे और प.पू. गुरुजी को ठीकठाक देखने पर ही वापिस लौटे।

हमारे मर्चंट परिवार के साथ के प.पू. गुरुजी के संबंध से तो हम सब विदित हैं ही। उसमें भी डॉ. महेन्द्र ने ऑप्रेशन दौरान और बाद में भी जो खड़े पांव सेवा करी है, उसकी मिसाल अस्पताल के स्टाफ के मुँह से निकलते एक ही वाक्य से मिलती है कि-'इस केस के फिज़िशियन डॉ. मर्चंट साहब हैं'। पू.रसिकभाई व पू. गोरधनकाका की इस विरासत को प.भ. डॉ. महेन्द्र मर्चंट एवं प.भ. हेमन्तभाई ने जो संजोये रखा है, वह सच में प्रेरणादायी है।

अब प.पू. पप्पाजी का आग्रह यह है कि दिल्ली में इन दिनों अत्यधिक ठंड होने के कारण मुंबई से प.पू. गुरुजी सीधे विधानगर ही आए और वहां थोड़े दिन रुक कर फिर दिल्ली जाएं। सुना है प.पू. गुरुजी के वहाँ रहने इत्यादि की तैयारियों में वे स्वयं लगे हैं और इसी कारण गुणातीत ज्योत की बहनों की दो शिविरें भी उन्होंने कैन्सल (रद्द) कर दी हैं। यह है **प.पू.पप्पाजी जैसे पुरुषों की बृहद् गुणातीत समाज के प्रति की अमर आत्मीयता का जीवन संगीत** ! ऐसी विभूतियों के पदचिन्हों पर चल कर हम आत्मीयता की सौरभ प्रसारें...

सो, अब अस्पताल से सात-आठ दिनों में छुट्टी लेकर प.पू. गुरुजी मुंबई के प.भ. जे.एम. पटेल साहब के यहाँ थोड़े दिन रुक कर विद्यानगर जाकर ठहरेंगे। प.पू. गुरुजी को देखने की जिन्हें-जितनों को इच्छा हो, वे बेहिचक विद्यानगर आयें—ऐसा प.पू. पप्पाजी का आदेश है और.....फिर हम सभी के प्यारे प.पू. गुरुजी अच्छी तरह स्वस्थ होकर दिल्ली आ जाएंगे...बस ! हम सभी को तब तक भीतर से खूब भजन करना है कि प.पू. गुरुजी बिना किसी कष्ट के जल्दी से जल्दी अच्छे हो जाएं....

प. पू. काकाजी की बताई सर्वदेशियता की राह पर प.पू. गुरुजी चल रहे हैं, तो यह स्पष्ट दिखता है कि वे आज सभी स्वरूपों के दुलारे हैं और इन सब के आशीर्वाद से प्रभु काम तो हमारे करते ही हैं।

तो, प.पू. गुरुजी की पकड़ी हुई इस सर्वदेशियता को कभी ना छोड़े व स्वरूपों के भेद में कभी ना पड़े। प्रकाश के भेद को देखना-वह हमारा विषय नहीं है। हमारे लिए तो सभी प्रगट विभूतियाँ महाराज के स्वरुप हैं–इसी राह पर हम अग्रसर रहें ऐसी प्रार्थना !

दिल्ली में एक सप्ताह 'खोसला अस्पताल' में रहने के दौरान डॉ. मुकेश भाटिया, डॉ. वर्षा भारद्वाज व अस्पताल के सारे डॉक्टर्स और स्टाफ ने प.पू. गुरुजी की जिस अपनेपन से देखभाल करी व साथ ही मुंबई में डॉ. मांडके ने अपनत्व का अहसास करा कर प.पू. गुरुजी का ऑप्रेशन खूब अच्छी तरह किया और अभी भी प.पू. गुरुजी की इतनी अच्छी तरह देखभाल कर रहे हैं–उसके लिए पूरा दिल्ली समाज ऋणी रहेगा....

यह घटना एकदम अचानक बनी थी, सो प.पू. गुरुजी से जुड़ा सारा समाज दुःख से रो पड़ा, उत्तेजित हो गया.....प.पू. गुरुजी ने तो हर एक को चाहे वह छोटा हो या बड़ा, बूढ़ा हो या जवान सभी को ऐसी स्मृतियाँ दी हैं–ऐसा प्यार दिया है, उनके जीवन में ऐसा स्थान लिया है कि इस खबर से सभी के भीतर में एक हलचल मच गई.... पर, गुरुहरि प.पू. पप्पाजी के इस दौरान दिल्ली में मौजूद होने से सभी को एक ढांढस बंधी थी..... बस ! हम सभी को एक भजन का ही उपाय लेना है और अन्तर से महाराज, स्वामी व प.पू. काकाजी एवं सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरुपों को प्रार्थना करेंगे तो वे सुनने ही वाले हैं।

साथ ही, प.पू. गुरुजी के अच्छे स्वास्थ्य हेतु अब भावना या भक्ति के वेग में आकर उन्हें खाने-पीने के लिए तली हुई चीज़ें या ऐसा कुछ ना दें–उसका खूब ख्याल हम सभी को रखना है। क्योंकि प्रभु तो भावना के भूखे होते हैं। दूसरा हमें उनके आराम का खास ख्याल रखना है और उन्हें अपने घर आने इत्यादि का भी आग्रह ना रखें.....

प.पू. गुरुजी का स्वास्थ्य अच्छा रहे वही हमारे जीवन की पूंजी है–वे हमारे लिए प.पू. काकाजी की अमानत हैं.......

(हमारे प्यारे प.पू. गुरुजी ने यह कष्ट स्वयं की देह पर क्यों लिया है? इसका विस्तृत वर्णन 'भगवत् कृपा' के अगले अंक में करेंगे....)

दूसरी बात–हम सभी जानते हैं कि हम सब पर ममता बरसातीं, हमेशा प्यार भरी हंसती मूर्ति देतीं–पू. दीदी लगभग पिछले चार साल से टेल बोन में लगी चोट के दर्द को सहन कर रहीं थीं। बड़े-बड़े सभी डॉक्टरों को दिखाने के बावजूद भी बीमारी पकड़ में नहीं आ रही थी।

22 नवम्बर '97–शनिवार को प.पू. पप्पाजी, डॉ. नीलम दीदी दिल्ली मंदिर पधारे। तो प.पू. पप्पाजी पू. दीदी के बारे सारी बात सुन कर बोल उठे–**'बेचारी चार साल से दुःखी हो रही है'।** बस, प.पू. गुरुजी ने प.पू. पप्पाजी की यह बात पकड़ ली कि–प.पू. पप्पाजी जैसों के मुख से ऐसा निकले, तो मतलब अपना काम हो गया......

प.पू. पप्पाजी पू. दीदी को अमदावाद अपने साथ चेकअप कराने ले गए। वहां सब चेकअप करने पर डॉ. प्रबोध देसाई ने सलाह दी कि–ऑप्रेशन करने से यह दर्द सेन्ट पर्सन्ट चला जायेगा। 4 दिसम्बर '97 की सुबह 10.00 बजे के करीब डॉ. प्रबोध देसाई ने पू. दीदी का ऑप्रेशन शुरू किया। ऑप्रेशन के समय प.पू. पप्पाजी, पू. ज्योति बहन, पू. डॉ. नीलम दीदी, डॉ. वीणा बहन, अमदावाद के सभी हरिभक्त–भाभियाँ और दिल्ली मंदिर से गए प.भ. अनुज भईया, प.भ. दालिया साहब, सौ. नयना बहन, सौ. हर्षा पटेल वगैरह वहीं मौजूद थे। यहां मंदिर में प.पू. गुरुजी ने सुबह से ही भजन शुरू करवा दिया था......सुबह ग्यारह बजे के करीब समाचार आया कि पू. दीदी का ऑप्रेशन खूब अच्छा हो गया है। सभी ने दिल से महाराज व सभी गुणातीत स्वरूपों को धन्यवाद-धन्यवाद कहे.... पू. दीदी तीन-चार दिन अस्पताल में रहे और फिर विद्यानगर गुणातीत ज्योत में आराम करने के लिए चले गए......और प.पू. गुरुजी की तबियत के समाचार सुनकर प.पू. पप्पाजी पू. दीदी को 16 दिसम्बर '97 को ही अपने साथ दिल्ली ले आए।

ऑप्रेशन से पहले 29 नवम्बर '97 को पू. दीदी को एक फेक्स में प.पू. गुरुजी ने लिखा था कि–**'ऑप्रेशन थियेटर में स्वयं प.पू. काकाजी तुम्हारे लिए खड़े रहेंगे.... और उसकी तुम्हें अनुभूति भी होगी.......'** और सच में ऑप्रेशन थियेटर में स्वयं श्रीजी महाराज की खड़ी मूर्ति रखी हुई थी। पू. दीदी उसी के दर्शन करते-करते और प.पू. गुरुजी की बात के विचार में ही बेहोशी में चले गये.......

ऑप्रेशन के बाद 8 दिसम्बर '97 को गुणातीत ज्योत में आराम करने हेतु रुकने दौरान एक दिन स्वप्न में प.पू. गुरुजी ने पू. दीदी को कहा भी कि–**'देखो मैंने फेक्स में लिखा था ना ! ऑप्रेशन थियेटर में प.पू. काकाजी खड़े रहेंगे...... श्रीजी महाराज की मूर्ति के रूप में प.पू. काकाजी ही खड़े थे......'** प.पू. गुरुजी से तो इस बारे में दीदी की कोई बात ही तब तक नहीं हुई थी.... इससे प.पू. गुरुजी की प्रभुधारक सत्ता का स्पष्ट दर्शन होता है।

पू. दीदी ने एक बात और बताई कि 22 नवम्बर '97 को अभी तो मंदिर में केवल प.पू. पप्पाजी व पू. डॉ. नीलम दीदी से प.पू. गुरुजी की अमदावाद डॉ. प्रबोध देसाई से सलाह करने की बात ही चल रही थी, ऑप्रेशन का तो कुछ भी पक्का नहीं हुआ था कि–उसी दिन रात को प.पू. गुरुजी ने फट एक चिट्ठी में लिख भेजा कि–**'मुझे लगता है कि अब की बार प.पू. पप्पाजी तुझे लेने ही आये हैं और अपने साथ ले जाकर ऑप्रेशन करवा कर अच्छा कर देंगे, देंगे, देंगे, देंगे और देंगे ही....'**

दूसरी ओर–पू. दीदी को चार साल से दर्द सहन करते देख कर कई हरिभक्त प.पू. गुरुजी को पूछते कि–'पू. दीदी की यह बीमारी दूर होगी या नहीं?'

तब भी प.पू. गुरुजी हर बार हर एक को एक ही जवाब देते कि–**'देखो यह भगवान का भेजा है। पू. दीदी को ठीक तो होना ही है। कब और कैसे होंगी वो तो मैं नहीं जानता। पर, जैसे ही भगवान बीमारी उठा लेंगे, फट से ठीक हो जाएंगी......'**

पू. दीदी के ऑप्रेशन दौरान पू. डॉ. वीणा बहन, पू. डॉ. नीलम दीदी, पू. डॉ. नीरू बहन व गुणातीत ज्योत की सभी बहनों ने खूब महिमा व भक्तिभाव से पू. दीदी की जो देखभाल करी, उसके लिए 'आभार' तो क्या कहें? क्योंकि अपनों को तो 'आभार' दिया नहीं जाता ! हाँ, सारे समाज की एक आत्मीयता का स्पष्ट दर्शन हो रहा था..... पू. दीदी के अमदावाद रहने दौरान भी प.पू. काकाजी से संबंधित हमारे पुराने जोगी प.भ. पकाई साहब, प.भ. उदयभाई, प.भ. शैलेषभाई, प.भ. जितेन्द्रभाई (मामू), प.भ. दिलीप कुमार, प.भ. आशितभाई, प.भ. महेशभाई, प.भ. हरेशभाई दोषी, प.भ. तुषारभाई एवं परिवार इत्यादि ने दिन-रात देखे बिना जो सेवा करी उसके लिए दिल्ली समाज नतमस्तक है.....

इसके अलावा अमेरिका के प.भ. नरेन्द्र भईया का फोन पर खास पू. दीदी के ऑप्रेशन के समय भी व प.पू. गुरुजी की तबियत खराब होने पर चिन्तित होना... भारत दौड़े आने की इच्छा जाहिर करने से उनके भक्तिभरे दिल का स्पष्ट दर्शन होता था कि अहो ! इतनी दूर रहकर और इतने कम समय का परिचय होने के बावजूद उनका प.पू. गुरुजी व पू. दीदी के प्रति कैसा अनूठा लगाव !

तो, हमें जो प्राप्ति हुई है उसके बारे में शब्दों में तो क्या कह पायेंगे.... बस, प्राप्ति के आनंद में अखंड निमग्न रहकर भजन किया करें–वही करना है और उन्होंने हम सभी के लिए जो परिश्रम किया है और हमारी पल-पल जिस प्रकार वे रक्षा करते हैं, उसका ऋण तो हम क्या चुकाएंगे? पर, बस भजन-प्रार्थना ही हम सभी को करनी है कि खूब अच्छी तबियत से वर्षों तक वे हमें अपने दर्शन, सेवा, समागम का लाभ दें और उनका परिचय बन कर–उनका हम पर किया गया परिश्रम–रखा गया भरोसा सार्थक कर सकें......

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

596. किसी ने प्रश्न किया कि–सीधे महाराज और आपके पास कैसे पहुंचा जाए? तब स्वामी बोले कि–महाराज को पुरुषोत्तम मानें और भगवान की आज्ञा पालें तो आ पाए। *प्र-6,28*

597. समझदारी रख कर ऐश्वर्य की इच्छा कोई नहीं करना; क्योंकि वह यदि आए तो हम कुछ ना कुछ कर डालें–ऐसे हैं। सो, इसमें कोई माल नहीं। विपरीत परिस्थितियों में स्थिरता रखनी। वह क्या? तो–धन चला जाए या लड़का मर जाए या खाने को अन्न नहीं मिले, तो– उसमें ज्ञान काम आता है। जैसे एक बनिये ने परदेस में जाकर करोड़ गिन्नी इकट्ठी करी और नाव भर कर आया व उसने किनारे पर उतरने फट्टे पर पांव रखा ही था कि नाव डूब गई। तब बनिया बोला–अहो ! गिरा ना पहाड़ सिर पर ! लेकिन फिर बोला–जन्म लिया था तब कहां था यह सब? वैसे ही एक फकीर को रास्ते में चलते हुए रस्सा मिला, उसने उसे कंधे पर डाल लिया। फिर वो रस्सा पीछे कहीं गिर गया और.... थोड़ा आगे चला तब उसे पता चला। तब सोचा–कोई बात नहीं, रस्सा पाया ही ना होता तो? यूं समझदारी रख कर आनंद में रहना और–'काकाभाई' वचनामृत में भी कहा है कि घर में दस लोग हों और वे सभी मरने वाले हों, उसमें से एक भी बच जाए तो क्या कम है? सो, यूं समझना। *प्र-6,29*

598. वरताल से वापिस आए उस दिन बात करी कि– **'आकुति चिति चापल्य रहिता निष्परिग्रहाः'**–यूं साधु के चौसठ लक्षण हों तभी साधु हो पाये और महाप्रलय तक गोपाळानंदस्वामी, क्रिपानंदस्वामी, स्वरुपानंदस्वामी और मुक्तानंदस्वामी जैसे साधु का दिन-रात निरन्तर समागम करें, तब पूरा साधु हुआ कहा जाए और साधुता के बिना तो सुख आए नहीं व आत्यंतिक मोक्ष भी नहीं हो सकता। तो, जितनी कसर रहेगी वह कसर टालनी पड़ेगी। *प्र-6, 30*

599. सभा में विद्यात्रानंदस्वामी वाली पत्री पढ़वा कर बोले कि यह बात यथार्थ जानने पर कुछ करना बाकी नहीं रहता।

इस पत्री को लेकर अचिंत्यानंद ब्रह्मचारी के पास पूरा ग्रंथ लिखवाया है। उसमें सारी बात आ गई है। अहो ! अभी बहुत बड़ी प्राप्ति है। ऐसे साधु तो भगवान जैसे कहे जाएं। अपने आप का बखान नहीं करना, ऐसा शिक्षापत्री में कहा है, पर कहे बिना किसी को समझ नहीं आएगी। फिर, बहुत घाटा पड़ेगा।

प्र-6, 31

600. आत्मनिष्ठा दृढ़ हो तभी सभी बातें होती हैं। उस पर कहा कि–

'भरने आतसका वरसे मेहारे, तोय नव्य दाझे मेरा देहा रे।
मरने बारे मेघ आवी झुमेरे, तोय नव्य भींजे मेरो रुमेरे'।।

ऐसी आत्मनिष्ठा होनी चाहिए। प्रथम का छबीसवां वचनामृत पढ़वा कर कहा कि यह भी निर्गुणभाव को पहुँचाए ऐसा है........ *प्र-6,32*

601. महाराज ने वरताल में सभी हरिभक्तों के पास सभा में कहा कि वैराट पुरुष ने इस चरणार्विंद की पचास वर्ष और डेढ़ प्रहर तक स्तुति करी तब ये ब्रह्मांड में पधारे हैं।

प्र-6, 39

602. देखो ना, देव की माया ने ऐसा मोह लगा दिया है कि– गाड़ी, पुस्तक, चेले और हवेली में माल माना है। पर इससे क्या होना है? बंधन होगा, सो इसमें कुछ माल नहीं।

'राज भयो कहा काज सर्यो महाराज भयो कहा लाज बढ़ाई;
शाह भयो कहा बात बड़ी पतशाह भयो कहा आन
देव भयो तो कहा भयो अहंमेव बढ़यो तृष्णा अधिकाई;
ब्रह्ममुनि सत्संग विना सब ओर भयो तो कहा भयो भाई'?

और भरतजी राज्य छोड़ कर हिरण में बंध गए। वह कोई साधु का मार्ग है क्या? और आसन, बिस्तर, चेला व गाड़ी जैसे तुच्छ पदार्थ के कारण बड़ा घाटा उठाना नहीं और सभी दोष से मुक्त होकर अच्छे साधु का सेवन करके साधुता सीखनी। इसी में माल है, वर्ना तो बड़प्पन व मान ना मिलने पर एवं गाड़ी या घोड़ा नहीं मिलने पर दुःखी हो जायें यह कैसी बात है?.... सो, ज्ञान सीखना जिससे किसी भी बात की अपेक्षा ना रहे और यदि ज्ञान ना हो तो मूर्खता से प्रपंच करते हैं। बाद में फुर्सत नहीं मिलेगी करके हम सब–गोपाळानंदस्वामी, क्रिपानंदस्वामी वगैरह बड़े-बड़े साधु तड़के नहाये बिना काम, क्रोधादिक की बुराईयों की गोष्ठी करते हैं। तब किसी ने कहा कि–देखो ना मरघट पर रहने वाले जैसे हैं, सो बदियों को याद करते रहते हैं और शिक्षापत्री तो पालते नहीं।

'ब्राह्मे मुहूर्ते शयनं विहाय'

नहाए-धोए बिना सुबह-सुबह ही ले बैठे हैं। तब और जो नये-नये हैं वे समझते हैं कि सही बात है। आज्ञा का उल्लंघन करने वाले ये ही हैं। पर, हम तो आत्मनिष्ठा और उपासना की बातें करते हैं जो कि सूक्ष्म भक्ति है। हाँ, स्थूल भक्ति में गौणता आती है, सो वे कहेंगे कि ये 'शिक्षापत्री' का उल्लंघन करते हैं। यूं शास्त्रों को झूठला कर दूसरों में अवगुण भरते रहते हैं.......

प्र-6, 43

603. महाराज ने चींटीयों के बिल की तुलना दी है, सो उसका त्याग करके विवेक को दसवाँ खजाना कहा है–उसे पकड़े रखोगे तो सुख होगा। अहो ! जीव में अज्ञान की सीमा नहीं है। कारखाने में, राजा में और पधरामनी में लगे हैं ! क्या-क्या बतायें? जगत के जीव की तरह शाम को कथा के दो वचनामृत बड़ी मुश्किल से समय निकाल कर पढ़ते हैं और फिर वही बात ! उससे भगवान राजी नहीं होते, सो सोच समझ कर वर्तना।

प्र-6, 44

604. 'श्रेयांसि बहु विघ्नानि' और लोक में भी कहते हैं कि अच्छे काम में सौ विघ्न। वह या तो भक्ति का चोला ओढ़ा कर माया को प्रेरित करे व एकांत में ध्यान करवाए। यूं करते-करते माया गिरा देती है। सो–सोचना !

प्र-6, 45

605. जागीरदार बड़ा धनवान हो तो जमीन इकट्ठी करे, बनिया बड़ा धनवान हो तो पैसा इकट्ठा करे, ब्राह्मण बड़ा हो तो पुस्तक इकट्ठी करे और चरवाहा बड़ा हो तो पशु इकट्ठे करे। पर, किसी ने भी एकांतिक के टोले इकट्ठे करें हैं क्या? दूसरे किसी में माल नहीं। सो, ऐसे साधु का समागम कर लेना और एकांतिक संत हो जाओ। रुपये तो पड़े रहेंगे, दूसरे पदार्थ भी पड़े रहेंगे और चल बसोगे। कोई भक्ति करे या रात में ध्यान करे, पर वह मन में यदि यूं सोचे कि ये सब खा-खा कर सो रहे हैं, और मैं ही करता हूं, तो करा सब कुछ खाक हो गया !

और बड़प्पन पाकर 'चेला-चेला' करता रहता है उस बारे तो क्या बतायें? तुंबीपात्र तो वही, पर चेला चुपके से उसमें शिकंजी पिलाए ! यूं छलाव करते हैं और चेला यूं ना भी करे तो उसके कान में मंतर भर कर करना सिखाये। यूं छलाव में जन्म गँवाते हैं। ऐसे छलाव में दोनों का निभता है। चेले का काम भी चलता रहे.....

प्र-6, 46

✡✡✡✡✡

निमंत्रण.......चलो मुंबई !

अत्यधिक आनंद की बात है कि–
ब्र.स्व. स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज
और
ब्र.स्व. स्वामिश्री योगीजी महाराज के परम कृपापात्र
एवं
ब्र.स्व. प.पू. काकाजी के सखास्वरूप
तथा
प्रत्यक्ष स्वरूपों के लाडले
परम एकांतिक महामुक्तराज प.पू. कांतिकाका का
अमृत महोत्सव 'बंधुमैत्री महोत्सव' के रूप में
प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों
प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी,
प.पू. जशभाई साहेब, प.पू. दिनकरभाई
और
प.पू. काकाजी के परम कृपापात्र प.पू. हरिभाई साहेब,
पू. कोठारीस्वामिजी, पू. भाईस्वामिजी, पू. निर्मलस्वामिजी,
पू. महेन्द्रबापु एवं दिव्य संतमंडल, मुक्तों के सान्निध्य में
रविवार, 18 जनवरी '98 की सुबह 8.30 बजे
समग्र योगी परिवार भक्तिपूर्ण हृदय से मना रहा है।
तो, आईये... सपरिवार एवं मित्रमंडल सहित
इस महामंगलकारी महोत्सव में
सहभागी होकर स्वयं को धन्य और कृतार्थ करें।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 8.1.98	गुरुवार	–	पुत्रदा एकादशी, व्रत
(2)	दि.12.1.98	सोमवार	–	पौषी पूर्णिमा मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का दीक्षा दिन
(3)	दि. 13.1.98	मंगलवार	–	धनारक समाप्त
(4)	दि. 18.1.98	रविवार	–	**'बंधुमैत्री महोत्सव'** ब्र.स्व.प.पू. काकाजी के सखास्वरूप पू. कांतिकाका की 75 वीं जन्म जयंती मुंबई में मनाई जाएगी।
(5)	दि. 24.1.98	शनिवार	–	षट्तिला एकादशी, व्रत ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III,
Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064

To,